19/3/1966 शनिचरवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– मुखड़ा देख ले प्राणी .....

मीठे–2 बच्चों ने गीत सुना। सिर्फ तुमने ही नहीं सुना। सभी सेन्टर्स के बच्चों ने ये सुना कि अभी अपन में देख लो कि कितना पुण्य किया है, कितना पाप मिटा है। क्योंकि सारी दुनियाँ पुकारती है साधु,संत,महात्मा– हे पतित को पावन करने वाले। यानी एक ही है पावन करने वाला। बाकी सबमें है ये पाप। अभी ये तो तुम बच्चे जानते हो पतित से पावन बनाने वाला...। पाप किसमें है? ये आत्मा में। ....आत्मा ही पावन, आत्मा ही पतित। देखो है बरोबर फर्क। यहाँ की आत्माएं पतित और यही आत्माएँ ही पावन थीं। इनमें पापों का दाग बहुत भरा हुआ है इसलिए सबको कहा जाता है पापात्मा। अभी ये पाप निकले कैसे ? पुण्यात्माएँ कैसे बनें? तो देखो, जब कपड़े के ऊपर दाग होता है तो ब्लॉटिंग पेपर रखते हैं यहाँ। मस देखा है कभी ? मस गिरता है तो ब्लॉटिंग पेपर रखते हैं। उसके ऊपर पानी डालते हैं तो ब्लॉटिंग पेपर चूस जाता है। ठीक है ना। कब देखा है ये? सुना है थोड़ा? अच्छा। तो देखो, पतित याद करते हैं किसको? ब्लॉटिंग पेपर एक। कौन–सा ब्लॉटिंग पेपर? शिवबाबा। उसको कहा जाता है पतित–पावन। और तो कोई ब्लॉटिंग पेपर है नहीं। ये पानी गंगा में स्नान करना , सागर में स्नान करना....वो तो ब्लॉटिंग पेपर है नहीं। उनसे तो बहुत ही कितना भी तुम आज़माइश करो ; क्योंकि मनुष्य कष्ट बहुत देते हैं ना, रस्ते बहुत बढ़ाते हैं ऐसे पतित से पावन होगा। तो देखो, इनका ऐसे है कि गंगा में स्नान करने से पतित–पावन होगा; परन्तु वो ब्लॉटिंग पेपर तो है ही नहीं। जन्म–जन्मांतर उसमें स्नान करते आये ; परन्तु और ही पतित बनते गये हैं दिन–प्रतिदिन। पतित को पावन करने वाला एक ब्लॉटिंग पेपर। वो कौन है? शिवबाबा। है भी छोटे ते छोटा, बिल्कुल ही इतना जरा और कितनों का पाप सभी नष्ट कराते हैं। किस युक्ति से? बोलता है– सिर्फ मुझ ब्लॉटिंग पेपर को याद करो तो मैं गारंटी करता हूँ कि चैतन्य है ब्लॉटिंग पेपर। वो तो है जड़ और यह चैतन्य। सारी दुनियाँ याद भी उनको करती हैं। तो वो कहते हैं क्या करो? कोई और तकलीफ नहीं देता हूँ। सिर्फ तुम हे आत्माओं! हैं भी तो बिल्कुल जरी। देखो, कितनी समझ की बात है, है भी बिल्कुल जरी। और वो बाबा भी इतना है बिन्दी समान। वो कहते हैं सबको कि मुझे याद करो तो तुम्हारा जो भी पाप है वो सभी मिट जायेगा। अभी देखो याद के ऊपर रहा ना। अभी हर एक अपने दिल से पूछे कि कितने तुम्हारे इस याद से कितने तुम्हारे पाप मिटे हैं और पुण्य हुए हैं और कितने पाप बाकी रहे हैं। पता कैसे पड़े? पता तब पड़े जबकि हर एक को ये युक्ति बताते रहें कि भई पाप नाश करने वाला है एक ब्लॉटिंग पेपर, अभी उनको याद करो। अभी राय देवे कौन? ये राय देनी तो अच्छी है; परन्तु और जो मनुष्य हैं वो ये सर्विस को लग जाते हैं और बाकी जो राय देते हैं वो याद नहीं करते हैं, उनका पाप मिटता ही नहीं है। देखो तो कितनी वण्डफुल बात है। है बिल्कुल थोड़ी सी बात ; क्योंकि बहुत मनुष्य हैं इतने सभी। उनके लिए देखो गायन ही है एक का कि हे पतित–पावन...। तो कितने अनेक पाप लगे हुए ना। काम का पाप, देहअभिमान का पहला पाप। वो सबसे बड़ा खराब। देहअभिमान का पाप है सबसे बड़ा पाप। बाप कहते हैं अपन को देहीअभिमानी समझो। वो भी छोटा सा जरा और मामेकम् याद करो। तो जितना तुम याद करेंगे...। देखो बाबा ने समझाया ना (कि) जो तुम्हारे ऊपर ये पाप लगे हैं, खाद पड़ी है...। भिन्न–2 प्रकार से समझाया जाता है। जितना तुम याद करेंगे, औरों को रास्ता बतायेंगे युक्ति से...। देखो, ये भी युक्ति है ना समझाने की। औरों को भी समझाएंगे तो औरों को समझाने से भी तो तुम्हारा भला होगा ; क्योंकि उसका भी भला होता है। तो इसी धंधे में लग जाओ। याद करेंगे, तो समझाया तो गया हुआ है कि बाप है और उनसे वर्सा मिलेगा ही जब गुलगुल हो जाएंगे। पाप मिट जायेगा तो बाकी पुण्यात्मा हो जाएंगे और ये देवताएँ तो हैं ही पुण्यात्मा। तो जितना याद किया है और औरों को याद कराया है ; क्योंकि दूसरे को भी तो राय देनी है ना..। ये तो हुआ पुण्य करना। अपनी राय दिया बाप ने कि मुझे याद करो। तो तुम्हारा काम है दूसरे को भी कहना कि भई एक को याद करने में...। पतित–पावन है एक। ये तो बहुत है ना। नदियाँ–वदियाँ ये सभी बहुत हैं। है एक। अगर नदियाँ भी हैं, तुम बच्चे हो ज्ञान की... तो भी तुम कहते हो कि एक को याद करो। तुम कोई अपन के लिए नहीं कहते हो। जैसे यहाँ बहुत गंगा में जाकर स्नान करते हैं

पावन होने के लिए। ऐसे नहीं होता है। तुम भी राय यही देती हो कि एक को याद करो। वही एक पतित–पावन है। उनकी ही महिमा है बहुत। देखो, पतित–पावन तो कहते ही हैं और फिर ज्ञान का सागर भी है। फिर देखो याद करने से...। बाबा ने समझाया है बच्चों को कि तुम्हारा जो पाप है ना, बस ये एक ही है बात और जो ही डिफिकल्ट है तुम बच्चों के लिए। सिर्फ तुम बच्चों को थोड़े ही बाबा कहते हैं। तुम लोग कई–2 ऐसे समझते हैं कि हमारे लिए कहते हैं। नहीं–2, पर मेरे ध्यान में ही ये सभी सेन्टर्स हैं। समझा ना। जहाँ सर्विसेबुल बच्चे जास्ती रहते हैं। बॉम्बे में, दिल्ली में। तो बॉम्बे याद....। जहाँ–2 सर्विस तहाँ–2 बाबा को याद रहता है उस सेन्टर को(का) ; क्योंकि ये सभी फुलवारियाँ हैं ना। शिवबाबा की ये सभी फुलवारियाँ हैं। तो जो–2 अच्छी फुलवारी होगी बाबा उस फुलवारी को याद करेंगे ना। कोई साहूकार है, उनको 5/10 बगीचे हैं। तो ज़रूर वो उनका अच्छा बड़ा बगीचा होगा ना। उनको ही याद करेंगे। हर एक मनुष्य ऐसे ही होते हैं। बड़े बगीचे में जाते हैं। फूलों की अच्छी–2 वैराइटी मिलती है। छोटों में इतनी नहीं मिलती हैं। ये तो तुम बच्चे समझते हो यहाँ बैठे हैं बाबा, तभी भी अपने बड़े–2 जो बगीचे हैं उनको याद करते हैं; क्योंकि वो सर्विस अच्छी करते हैं। ये सर्विस बहुत डिफिकल्ट तो है नहीं। सिर्फ रास्ता इशारे से, मुख से कि शिवबाबा को याद करो। पतित–पावन वो है। ये खुद कहते हैं मुख से कि तुम मुझे याद करो तो तुम्हारा पाप भस्म हो जायेगा। तो देखो, ये कितना फर्स्टक्लास ब्लॉटिंग पेपर है सारी दुनियाँ के लिए..। बरोबर सारी दुनियाँ उस एक ब्लॉटिंग पेपर को याद करती है, पतित पावन को। देखो ये गाँधी,साधु,संत,महात्मा उनको याद करते हैं ना। अभी वो युक्ति बताते हैं। मुझे याद करने से तुम्हारे पास ये सभी जो दाग लगे हैं देहअभिमान का, देहअभिमान का दाग भी छूटे तब जबकि देही अभिमानी होकर बाप को याद करें ना। तो पहले–2 तो देहीअभिमानी बनना पड़े। मेहनत जो भी है तुम बच्चों के लिए ये है यह। बाबा को कोई सच्चा बताते नहीं हैं। कोई–2 आगे लिखते थे। चार्ट बनाकर भेज(ते थे)। थक गए बिचारे ; क्योंकि बाबा समझते हैं बड़ी मंजिल है। वो जो बिचारे लिखते थे, माया ने वो भी नशा तोड़ डाला। अभी लिखते ही नहीं हैं। नहीं तो लिखना चाहिए तो दिन–प्रतिदिन उन्नति हो। तो चार्ट आना चाहिए।... 6 महीने में भी चार्ट आना चाहिए। ..... महीने–2 का ही चार्ट लिखने में...परन्तु नहीं, ये बाप समझते हैं कि वो थक जाते हैं। ये जो योग का चार्ट है ना, बहुत... क्योंकि देहअभिमान है आधाकल्प का। तो बस देहीअभिमानी। अभी ये सर्विस करनी चाहिए ना तुम बच्चों को। वो भी अविनाशी सर्जन, तुम भी उनके बच्चे। अभी कोई .... बहुत तकलीफ तो नहीं है कुछ भी। सिर्फ तुम अपन भी याद करो और औरों को...। यह है तुम्हारी सर्विस। कहाँ भी जाना, और कोई धंधा नहीं है तुम्हारा। सबसे ऊँच ते ऊँच धंधा है तुम बच्चों का ये, जिनको जो–2 याद करते हैं। तो जो याद ही नहीं करते हैं वो धंधा करेंगे ही नहीं; क्योंकि वो याद ही नहीं करते हैं तो धंधा धूर करेंगे। वो धंधा करेंगे नहीं। ...बिचारा जो भी होवे उनको ये हम समझाते जावें कि पतित–पावन वो है। तुम्हें अगर पावन बनना है तो उनको याद करते रहो। इस योगाग्नि से तुम्हारे पाँच विकार बिल्कुल खतम हो जायेंगे। सबके लिए वो एक ही है। सभी वो एक को ही बुलाते हैं। तो देखो, बुलाते हैं, तुम मिले हो। .... तुम्हारे से अभी पूछा जाता है– अभी क्या समझती हो? योग में रखने से कहाँ तक तुम्हारा ये पाप... क्योंकि जितना–2 पाप विनाश होता जायेगा, जितना याद करेंगे, इतना खुशी का पारा ऑटोमैटिकली चढ़ता रहेगा। जितना याद करेगा इतनी खुशी ज़रूर चढ़ेगी जरूर ; क्योंकि याद से समझते हो कि हम पावन भी बनते जाते हैं। बाबा से वर्सा भी ऊँचा लेंगे। अभी वो तो हर एक दिल जाने।.. और भला कोई जान नहीं सके? नहीं, और भी बहुत जान सकते हैं; क्योंकि उनकी सर्विस से जान जाते हैं कि ये सबको रास्ता बताते रहते हैं। भई शिवबाबा को याद करो, वो पतित–पावन है। ...अभी तमोप्रधान बन रहे हो; क्योंकि तमोप्रधान दुनियाँ है। सभी आत्माएँ और ... इस समय में हैं ही सभी तमोप्रधान। ये तो यहाँ बिल्कुल कॉमन बात है; क्योंकि कलहयुग का अंत है बिल्कुल ही। तो सभी आत्माएँ पतित ज़रूर हैं। अच्छा, उनको बोलना है कि अपनी पावन दुनियाँ में वापस जाना है ना। जब वहाँ रहते थे तब तो सतोप्रधान थे ना। बाबा समझाते हैं ना– जो भी आत्माएँ हैं, वहाँ पवित्र हैं। तो अभी पवित्र तो ज़रूर

बनना पड़े ना। अभी स्वर्ग में आये, न आये, पहले पवित्र बनें, घर तो जा सकें ना। तो उनको ये रस्ता ज़रूर दिखलाना चाहिए, भई बाप को याद करने से...। तुमको वर्सा चाहिए ना! तो वर्सा चाहिए बेहद के बाप से। अच्छा, बेहद का बाप खुद ही कहते हैं कि तुम मुझे याद करो। मेरे में ताकत हैं, मेरे से याद करने से तुम्हारे पाप कट जायेंगे, भस्म हो जायेंगे। याद करना, न करना, वो तो बच्चों का काम है ना। बाबा तो युक्ति बहुत...। बस सेकेण्ड में युक्ति.. बताते हैं ना। और कोई तकलीफ थोड़े ही है। जैसे उसकी भी बताते हैं ना– ब्लॉटिंग हो तो ब्लॉटिंग पेपर रख दो और उसके ऊपर थोड़ा पानी दो तो वो चूस जायेगा तो तुम्हारा भी जब याद करेंगे तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे..... सबसे बडे ते बड़ी ... बात है पावन बनना। वो पीछे की बात है; क्योंकि मनुष्य पतित बने हैं सो कहते हैं पतित–पावन। वो कोई ऐसे नहीं (कहते) कि हे पतित–पावन हमको राजधानी दो। वो भी नहीं कहते हैं। सिर्फ माँगते ही हैं– हे पतित–पावन, आओ। आ करके सबको पावन बनाकर साथ में ले जाओ; क्योंकि ये लिखा हुआ है कि बाप जब आते हैं, मच्छरों के मिसल सभी आत्माओं को पावन बना करके ले जाते हैं; क्योंकि पीछे यहाँ कोई भी पतित आत्मा रहने की है नहीं। एक भी रहने की नहीं है। .....जिसको स्वर्ग मिलता है भारत खण्ड को और उनको ही उठाते हैं पहले। है तो सबके लिए ना ये दवा। जो भी मिले। .... क्या तुम मुक्ति में जाना चाहते हो? फादर के पास जाना चाहते हो? फादर आ करके ये कहते हैं कि तुम आ नहीं सकते हो; क्योंकि तुम्हारी आत्मा है पतित। मैं हूँ लिबरेटर ज़रूर। ... गाइड भी हूँ। तो मैं आ करके ये राय देता हूँ कि हे आत्माओं, हे बच्चों! तुम याद करो। ...मैं कैसे ले जाऊँ तुमको? तुम सभी छी–2, पतित हो ना। तो सिर्फ मुझे याद करो तो मैं तुमको ले जाऊँगा। अभी देखो मुक्तिधाम तो बिल्कुल ही सहज है। तुम सबको कह सकते हो। बस ये भी कह सकते हो जब वहाँ जायेंगे, पीछे यहाँ आयेंगे पवित्र हो करके फिर सुख ही भोगेंगे। ..... वो और तो कोई तकलीफ नहीं देते हैं। दुबारा फिर कहते हैं कि हर एक अपने मुख में भी देखे, दिल में भी झाँके हम याद करते हैं और कहाँ तक याद करते हैं? जितना याद करेंगे इतना खुशी का पारा तो ज़रूर चढ़ेगा। ....खुशी का पारा चढ़ेगा जब औरों को भी ये.. . क्योंकि और कोई भी जानत नहीं ....। ये साधु,संत,महात्मा, ये शास्त्र,वेद,पुराण, इनमें कोई का भी है नहीं लिखा हुआ कहाँ भी। बिल्कुल ही नई–2 बात है। तो देहअभिमान टूट जाये, देहीअभिमानी हो जो फिर भविष्य 21 जन्म भी चल सके। तो तुमको आत्मअभिमानी बनना पड़े। आत्मअभिमानी बनना ये बड़ी मेहनत लगती है। ...जो अव्वल नम्बर का पुरूषार्थी है वो खुद कहते हैं कि मासी का घर नहीं है। बताते नहीं हैं; परन्तु बाबा तो जानते हैं कि सच्ची दिल से, जिस युक्ति से याद करना चाहिए, एक दिन में एक दफा भी कोई याद नहीं करता होगा। दो–चार रोज़ भी नहीं याद करते होंगे। यहाँ तो बैठते हो तब याद दिलाया जाता है। पर जब कोई यहाँ–वहाँ मुसाफिरी में जाता है, कहीं धंधे–धोरी में। बाहर कोई याद भी नहीं करते हैं। बिचारे सब भूल जाते हैं। अरे, यहीं रहते–2 बहुत भूल जाते हैं। नहीं तो अगर देहीअभिमानी हो तो पाप नहीं करे; परन्तु नहीं, यहाँ तो सारा दिन... वो है ना– हियर नो ईविल, सी नो ईविल। ये बंदर के लिए तो नहीं है ना। मनुष्य के लिए है ना। मनुष्य को ज़रूर बंदर कहते हैं। तभी तो बंदरों का बैठ करके बनाया है ना। ये तो बिल्कुल सच्ची बात है ना। अभी तो मनुष्य को बताते हैं, देखो बाबा के पास खिलौना रखा है ना। मनुष्य कहते हैं– हियर नो ईविल, सी नो ईविल, टॉक नो ईविल। तो यहाँ करते ही नहीं हैं। ....कहा ही जाता है किसको कहना है? सब कुछ बताना बाबा को याद करो। ये सबको एक ही रस्ता बताना, पापात्मा से पुण्यात्मा...। वो तो यहाँ एक/दो को कभी कोई बताते ही नहीं हैं। ... तुमको अभी सबको सुख देना है और सबको कहना है कि तुम देहीअभिमानी बनो, बाप को याद करो घड़ी–2। अगर बच्चों को सच्चा सुख किसको देना है। और कुछ भी नहीं दो, पैसा नहीं दो, कौड़ी नहीं, उनको सिर्फ कहते रहो बाप को याद करो जो पतित–पावन है। याद करो तो तुम्हारा जो विकर्म है वो भस्म हो जायेगा। देखो है ना भगवानुवाच मन्मनाभव। मामेकम् याद करो तो तुम विश्व का मालिक बन जाएंगे। फिर भले उन्होंने भूल की है, कृष्ण का नाम डाल दिया है। है बाप का नाम। अब लिखा तो है ना। खाली भूल की है।.. बाप को याद करो और वर्से को याद करो। अभी कृष्ण तो वर्सा

नहीं देगा। कृष्ण तो वर्सा तब देगा जब शादी करे, बच्चा करे। उनको वर्सा एक वो देगा। शिवबाबा तो वर्सा सबको देने वाला है ना। तो देखो, कितनी सहज बात है समझाने की। तो मुख से और कुछ नहीं बोलो। धम–2 धमचक्कर सारा दिन न करो। सिर्फ बाप को याद करो। एक/दो को उल्टी बातें सुनाने के बदली में, झरमुई–झगमुई ... के बदले एक/दो के ऊपर कल्याण करो। बोलो, बाबा को याद करो। देखो, खाना पकाते हैं, बाप को याद करो। ये काम करते बाबा को याद करो। अरे तो दूसरे लोग आवे ना, आकर यहाँ किचन देखे (तो) बोले– वाह! यहाँ तो बाबा के पास तो सभी ब्लॉटिंग पेपर्स ही हैं। फिर वो अंदर दिल में देखेंगे, नहीं तो बाप से पूछें .. बाबा, हमें क्या समझते हो? अगर हम अभी मरें तो हमारे कितने पाप कटे याद करके...। बाबा की बात तो अलग रही। वो तो सब कुछ जानते हैं अच्छी तरह से। वो हिसाब–किताब तो उनके पास है; पर ये भी बता देवे कि ये किस प्रकार का...। शिकल से ही ... कर देंगे कि ये तो बाबा की याद में बड़े मस्त हैं। इनका चेहरा देखो तो खुशनुमा जैसे देवता का। इनका चेहरा देखो, जैसे मुर्दा हुआ पड़ा है एकदम। ...तुम समझते हो आत्मा का जब पाप उठते जायेंगे तो ज़रूर अंदर में आत्मा खुश होती रहेगी तो शरीर भी तो खुश देखने में आयेगा ना। सारा मदार आत्मा के ऊपर है। आत्मा खुश है तो शरीर भी खुश है बहुत अच्छी तरह से। आत्मा को कुछ होता है तो शरीर को होता है। देखो, आत्मा को दुख हुआ। अभी तुम बच्चों को बाप कहते हैं कि सिर्फ सबको ये एक बात कहते रहो कि शिवबाबा कहते हैं, भगवान कहते हैं, मुझे याद करो तो तुम्हारा सभी पाप गल जायेगा और तुम वर्सा लेंगे। ये तो तुमने सुना है ना। तो उन्होंने झूठ कर दिया है कि कृष्ण ने बोला है। अभी कृष्ण को देखो याद करते हैं, बहुत ही ढेर याद करते हैं, पाप तो मिटते नहीं हैं। कृष्ण को याद करते–2 ये तो अभी पतित भी बन गये हैं एकदम। कोई को मालूम नहीं कि किसकी याद करना है। .....बाप को जानते नहीं। उनका रूप क्या है वही नहीं जानते हैं। अगर कोई सर्वव्यापी भी कहे तो भी बाबा का रूप है ना वो भी आत्मा हो जावे; क्योंकि सर्वव्यापी...। जब आत्मा ही स्टार मिसल है। बोलते हैं ना– चमकता है अजब तारा। तो जब परमात्मा है तो भी फिर लिंग नहीं है, वो भी तो इतना जरा सा है; क्योंकि कहते हैं सर्वव्यापी है, तो वो भी स्टार है तो वो भी स्टार रूप है यानी आत्मा को ही परमात्मा कह देते हैं। हम–आप तो ... ठहरे ना ऐसे भी। हिसाब करेंगे तो वो जो बिन्दी है, चमकता है तारा, तो बस परमात्मा भी वही हुआ ना। कृष्ण बड़ा नहीं हुआ ना। वो भी उसको चैतन्य कहें ना बरोबर। वो छोटी सी चीज़ में जब प्रवेश करते हैं। ...देखो ताकत है उस बाप में। सिर्फ सबको कहते रहते हैं उस छोटी सी बिन्दुओं को (कि) हे बच्चों! मामेकम् याद करो। अभी क्या छोटी सी चीज़ है और क्या याद करना है, आवाज़ कितना खुला होता है कि हाँ बरोबर कैसे कहते हैं, इन ऑरगन्स द्वारा कितना आवाज करते हैं। अगर ये ऑरगन्स न हों, आवाज तो करके दिखलावे। देखो, इन ऑरगन्स से आत्मा आवाज़ कितना करते हैं और कितना बोलते हैं और क्या आत्मा, अभी समझाते हैं जिसमें परमात्मा ने आकर कहा है कि हे बच्चे, हे छोटी सी स्टार मिसल आत्माएँ। अभी ये तो तुम किसको भी कह सकते हो ना कि परमात्मा आत्मा, शेप तो एक है ना। तो परमात्मा को कुछ दूसरा इतना बड़ा लिंग या फलाना लिंग तो नहीं मान सके ना। नहीं। वो भी आत्मा ही। बाबा भी बोलते हैं वो भी है, मैं भी ऐसे ही हूँ; परन्तु मैं आया हूँ, पर मैं पतित–पावन हूँ ज़रूर। सबकी आत्मा पतित ज़रूर है तब बुलाते हैं। तो मैं आता हूँ, बिल्कुल सीधी ... बात कहता हूँ। एक बात, कोई तकलीफ नहीं। देहीअभिमानी बनो और बाप को याद करो और औरों को भी ये रास्ता बताते रहो। बस, और यही है जब महाभारत की लड़ाई लगी थी तब मैंने यही आ करके कहा था और मैंने कहा था। कृष्ण के कहने से उन्होंने इतनी सारी लड़ाई महाभारत, भागवत और कितने–2 बैठ करके शास्त्र रचे हैं। सिर्फ कृष्ण के डालने से। नहीं तो मेरे डालने से शास्त्र की कोई दरकार ही नहीं है बिल्कुल ही। मैं तो आकर सिर्फ अक्षर ही दो बताता हूँ– मन्मनाभव, मद्याजीभव। पीछे बैठकर डिटेल में थोड़ा समझाता हूँ (कि) झाड़ है, उसका...ये फाउण्डेशन है, ये डार है, उसकी ये तीन ट्यूब हैं, उनमें ऐसे–2 फलाना आते हैं। ये सब आते हैं। कोई तो कोई बड़ी बात नहीं है समझने की झाड़ की और गोले की। देखो, आज भी भिन्न–2 करके समझाते हैं ना कि बच्चे देखो,

कितनी बड़ी चीज़ है। कितना पापआत्मा ; क्योंकि ये सभी दाग है ना। पाप के दाग कहे जाते हैं। ये कैसे मिटे पाप के दाग? ये तो समझते हैं कि गंगा में जाकर स्नान करने से ये पाप के दाग आत्मा से...। अभी आत्मा का तो स्नान हुआ ही नहीं। ये तो शरीर का स्नान हुआ। ये है आत्मा का स्नान। आत्मा अपने बाप को याद करती है, जिससे वो पतित से पावन बन...। अभी याद की बात हुई, कोई स्नान की बात तो हुई नहीं। इसको कहा जाता है याद की यात्रा। बस याद करते जाओ, याद करते जाओ, पाप खतम होते जाओ। पिछाड़ी में जा करके बाप के पास चले जायेंगे। है तो बहुत ही सहज। रोज़–2 बाबा समझाते हैं और बरोबर अगर तुम देखेंगे–सुनेंगे तो जो गीता कृष्ण की करके लिखा है, उसमें भी दो अक्षर ज़रूर है आगे और पीछे। ... इस बात के ऊपर मन्मनाभव है। वो तो मद्याजीभव तो है ही है। बाप को याद करेगा तो वर्सा तो मिलेगा। मद्याजीभव के लिए इतनी बात नहीं है। सिर्फ मुझे याद करो तो तुम्हारा पाप मिट जावे। ये तो है ना ब्लॉटिंग पेपर। अविनाशी सर्जन, अभी सर्जन तो नहीं है, मनुष्य तो नहीं है ना। अविनाशी सर्जन क्या है? वो बिन्दी है। देखो, उसको हम.. ब्लॉटिंग पेपर कह देते हैं। सो भी सबके लिए। सारी दुनियाँ के लिए एक ब्लाटिंग पेपर और है भी देखो कितनी जरी। हैं भी सभी आत्माएँ कितनी जरी और याद करना है उस जरी को। सबको(ई) एक को याद करो, देखो ब्लाटिंग पेपर कितना फर्स्टक्लास, अविनाशी है और ये भी कल्प–2 की बात समझाते हैं कि कल्प–2 मेरे को याद करने से पावन बन जाते हो। पीछे रावण आ करके तुमको पतित बनाते हैं। फिर मैं आता हूँ। मैं सिर्फ आकर कहता हूँ मामेकम् याद करो तो तुम पतित से पावन बन जायेंगे, तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। अभी बताओ कितना याद करना चाहिए। अपने दिल से पूछो कि हम कोई चार्ट भेज दे.....। कोई की ताकत नहीं है बाबा को चार्ट भेज सके। चार्ट बनाना, रखना इम्पॉसिबल है; क्योंकि ये जानते हैं चार्ट बनाते–2 आज जो हम लिखते हैं कि मैं सारे दिन में एक घण्टा याद किया। वो फिर एक,दो,तीन बरस के ... लिखेगा बाबा, मैं याद ही नहीं करता हूँ। वो भी जो एक घण्टा रहता है वो भी फिट गया एकदम। वो ग्रहण बैठ गया। ग्रहचारी बैठती है ना। ...भले कोई कितना भी याद करता हो, वो कहते हैं अच्छा हम चार घण्टा याद करते हैं; परन्तु नहीं, एक दफा में उसका समाचार आयेगा कि बाबा वो चार घण्टा तो क्या, मैं पाई भी याद नहीं ...। अब तो मैं याद ही भूल गया, छोड़ दिया। हमने जो आपके थे योगी जीवन, वो भी हम छोड़ करके शूद्रपुरी में चला गया। अभी हम याद भी नहीं करते हैं। देखो, ऐसे भी तो होते हैं ना। वण्डर्स तो है ना बरोबर ऐसे। तो समझा जा सकता है जो याद न करते हैं, न कराते हैं, क्या होगा उन बिचारों का। तो बाबा बैठकर समझाते हैं सभी बातों से एक बात। इतना सारा ज्ञान सागर से सबसे एक बात, और सभी बातें छोड़ दो भले। एक बात कि हे बच्चों! देहीअभिमानी भव और मामेकम् याद करो। और हो भी पहले आत्मा ज़रूर। जानते हो, कहते हो हम आत्मा एक शरीर छोड़ करके दुःखी होता हूँ और दूसरा लेता हूँ। हम सुखी होता हूँ, दुःखी होता हूँ। जैसा–2 कर्म करता हूँ ऐसे सुखी होता हूँ, ऐसे दुखी होता हूँ। पाप करता हूँ तो दुखी होता हूँ, पुण्य करता हूँ तो सुखी होता हूँ। किसको मीठा बोलता हूँ तो मुझे अच्छा लगता है, किसको कड़वा बोलता हूँ तो मुझे भी दुःख होता है कि नाहक मैंने इनकी दिल दुखायी यानी आत्मा को दुखाया। दिल आत्मा में होता है ना। तो देखो, एक/दो की दिल दुखाना, तो बाबा कहते हैं (कि) एक/दो को सुख पहुँचाओ। उनको यही रास्ता बताओ। बस यही है तुमको। सुख ही उनको इससे मिलेगा कि तुम बाप को...। एक ही बार आते हैं। बाबा आ करके रास्ता बताते हैं। तो कुछ समझा, नहीं तो पीछे पछतायेंगे। अभी सुनते हैं कानों से और फिर इसे भूल जाते हैं एकदम। फिर एक/दो को.....वो पुराना धंधा पापआत्माओं का ही करते रहते हैं। नहीं तो पुण्यआत्माओं का धंधा करना। सिर्फ एक बात कि सबको याद दिलाते रहो। कोई बिगड़े या कुछ भी हो या कोई भी ऐसा–वैसा देखो। देखो कोई मनहूस होकर खड़ा है या कोई मुरझाया हुआ है। अरे, बाबा कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे ये सभी दुःख दूर हो जायेंगे। फिर गारंटी है 21 जन्म तुम कभी भी कोई दुःख नहीं देखेंगे। तुम इस धंधे में लग जाओ। सबसे अच्छा धंधा है ये। देखो, बाप समझाते हैं। इतने सभी सेन्टर्स वाले बच्चे समझते हैं! सब तो एक जैसे हैं नहीं। बहुत ही एक/दो को दुःख देते हैं

देहअभिमान से। देखो, देहअभिमान में कोई भी एक/दो को देखते हैं, प्यार करते हैं, तो एक/दो को दुःख देते हैं; क्योंकि बाप से विस्मृति हो गयी। ये माया फिर विघ्न डालती है इस देहअभिमान में।... इसमें विघ्न थोड़े ही डालेंगे, ये नॉलेज है ना। अरे, ये तो स्कूल में बहुत.. नॉलेज पढ़ते हैं। ये तो नॉलेज कुछ भी नहीं है, पाई–पैसे की नालेज है। वो तो बिचारे इतने बड़े–2 सब्जेक्ट्स पढ़ते हैं– साइंस फलाना, मत्था ही खराब हो जावे। अरे, ये तो नॉलेज (कि) सृष्टि का चक्कर कैसे फिरता है। वो भी एक सेकेण्ड की चीज़ है एकदम। ...बाकी याद जो है, वो बाबा जानते हैं कि याद में कौन रहते हैं। कितने फँस मरते हैं, बात मत पूछो। ये बड़ा कड़ा रोग है। आधाकल्प का है ना। नॉलेज तो तुम अभी इस बच्ची को स्कूल में बिठाओ तो 12/15 वर्ष में आई.सी.एस. का इम्तिहान पास करके देगी। बड़े ते बड़ा इम्तिहान पास कर देगी। ये तो बिल्कुल छोटी नॉलेज है। ड्रामा को जानना है या आखानी को जानना है। 5000 वर्ष क्या हुआ? फिर आज ये भारत 5000 वर्ष कैसे था, अभी कैसे हुआ। सो तो ये सीढ़ी लगी है। समझाएंगे ज्ञान आ गया। बाकी याद की ये बड़ी बीमारी लगी है बहुत–3, बात मत पूछो, इसमें ही सब फँस मरते हैं। इसलिए ये इतनी उन्नति को नहीं पाय सकते हैं। फिर तो बाबा कह देते हैं कि ड्रामा। ड्रामा अनुसार इस समय तक जो बच्चों ने उन्नति की है इस याद से, बस कल्प पहले भी ऐसे हुई थी। तो इसलिए फिर पुरूषार्थ कराते रहते हो कि बच्चे, बाप को याद करो। ये योगाग्नि से ये जो पाप हैं सब भस्म हो जायेगा। अभी अविनाशी सर्जन कहा जाता है। ..... कोई इंस्ट्रुमेंट थोड़े ही है उनके पास। सर्जन...कहते हैं मामेकम् याद करो। और बहुत फेल होते हैं अच्छे–2 बच्चे। भले वाणी तो चलाते हैं। अरे, वाणी तो बहुत अच्छी चला सकते हैं। .... वो कोई बड़ी बात थोड़े ही है। ये तो आखानी है। ये तो बेबियाँ भी बता देती हैं। ... थोड़े ही बैठकर शिव को याद करती हैं। ये तो उनको घड़ी–2 कहो तभी। यहाँ तो बेबियाँ भी कुछ याद करें। यहाँ तो ..बड़े भी नहीं याद करते हैं। अच्छा चलो बच्ची, टोली ले आओ। बड़ी–2 बात है देहीअभिमानी भव। ....अभी सब लिखते हैं– बाबा, अभी...बिल्कुल अच्छी तरह से। नहीं तो कभी कोई लिखता था, कभी कोई लिखता था। बड़ी आसानी हो गयी। ये देखो, बच्ची सीख गयी और टीचर ने सिखलाय दिया। तो सभी बच्चे जो भी हैं इनको थैंग्स भेज देना चाहिए। जो लिखें ये प्वाइंट सीखी हैं और जिसने सिखलाया है। तो दोनों को मिलना चाहिए। पहले कौन– सिखलाने वाला या सीखने वाला? दोनों...। बोलता है– इनाम क्या दें? हम बोला– वाह! बादशाही मिलती रहती है। अभी आपसे और क्या इनाम माँगेंगे। जब आप आपे ही आये हो बादशाही देने के लिए। आपे ही, हमने माँगी नहीं थी। हम तो कहते थे– हे पतित–पावन, आओ। बाकी क्या देगा, उनको कोई को पता भी नहीं है...। बच्चे (बोलते) हैं– बाबा, आप हमको...बादशाही देते हो। आपसे बाकी क्या लेंगे! उनके आगे तो और कोई चीज़ है नहीं।

अच्छा! मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति, देखो सभी सेन्टर्स को बोलता हूँ ना। अभी सभी सेन्टर्स के लिए ही बाबा कहते हैं। बेहद का बाबा है ना, उनको सभी सेन्टर्स...। मीठे–2 सिकीलधे, सर्विसेबुल ; अभी सर्विसेबुल भी वही बनेंगे जो ... को याद करते होंगे। ब्लॉटिंग पेपर बाबा कहते हैं। देखो, बाबा नाम कैसा छोटा रख देते हैं, है कितना बड़ा। माँ–बाप अपने को ऐसे ही कहते हैं। अच्छा! मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग।